संध्या ओ आरती सुमिरन होवे,

दोहा संध्या सुमिरण आरती,
भजन भरोसे दास,
मनसा वाचा कर्मणा,
होत विघ्न को नास।

संध्या ओ आरती सुमिरन होवे,
सुमिरन किया आनन्द फल होवे।।

पहली ओ आरती प्रेम प्रकाशा,
कर्म भर्म का करीया ओ नाशा,
संध्या ओ आरती सुमिरण होवे,
सुमिरन किया आनन्द फल होवे।।

दुजी ओ आरती दिल आय देवा,
तन-मन-धन से करलो री सेवा,
संध्या ओ आरती सुमिरण होवे,
सुमिरन किया आनन्द फल होवे।।

तीजी ओ आरती तीर गुण पूजे,
सतगुरु ज्ञान अगोतर पुजे,
संध्या ओ आरती सुमिरण होवे,

सुमिरन किया आनन्द फल होवे।।

चौथी ओ आरती चारों जुग पुजा,
गुरु के सम्मान और नहीं दुजा,
संध्या ओ आरती सुमिरण होवे,
सुमिरन किया आनन्द फल होवे।।

पांचवी आरती पद निर्माणा,
केवे कबीरमा सुणो धर्मी दासा,
यह हंसा सत लोक निवासा,
संध्या ओ आरती सुमिरण होवे,
सुमिरन किया आनन्द फल होवे।।

संध्या ओ आरती सुमिरण होवे,
सुमिरन किया आनन्द फल होवे।।

गायक जगदीश / राजु बेरवा।
चारभुजा साउंड जोरावरपुरा।

Source: https://www.bharattemples.com/sandhya-aarti-sumiran-hove/

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans

Facebook: https://www.facebook.com/bharattemples/
Telegram: https://t.me/bharattemples
Youtube: https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw